DOI Number https://doie.org/10.0424/shodritu.2024679748

PEER Reviewed & Refereed **JOURNAL**

ISSUE-36 VOLUME-2 IMPACT FACTOR- IIJIF-8.712

ISSN-2454-6283 April-June, 2024

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

(Cosmos– 2019-4.649) Scopus Impact Factor (1.25) Thomson Reuters Edwin Impact Factor-2.88 ETC

शोध-ऋतु

2

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु पता
महाराणा प्रताप होउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड़ -431605 (महाराष्ट्र)

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

अनुक्रमणिका

1.भारतीय शासनः शासन के विभिन्न रूपो का सश्लेषण.....6
–संदीप कुमार.....6
2.समकालीन हिंदी बाल–काव्य : स्वरूप एवं संभावनाएँ.....8
–प्रो.चंद्रकांत सिंह.....8
3.अमरोहा जनपद में जनसंख्या गत्यात्मकता और परिवार कल्याण : एक विश्लेषण.....11
–[1]चेष्टा, [2]डॉ0अंजना श्रीवास्तव.....11
4.नव्या गतीचे प्रमेय मांडणारा कवी : रोहन नागदिवे.....14
–डॉ.मंगेश बनसोड.....14
5.गायब होता देश : पृथु–तनय की संघर्ष की गाथा.....16
–रेखा कुमारी.....16
6.कृत्रिम बुद्धिमता और कविता.....18
–धरमवीर सिंह गुर्जर.....18
7.हिन्दी उपन्यास और तृतीय लिंगी विमर्श : बीच की बहस.....19
–रजत सिंह.....19
8.हिंदी यात्रा साहित्य का विकास तथा राहुल सांकृत्यायन का यात्रावृत्तान्त.....22
–निरंकार मिश्रा.....22
9.भारत–अफगानिस्तान सम्बन्ध एवं तालिबान : एक मूल्यांकन.....25
–[1]स्वाती सिंह, [2]डॉ0 स्मिता पाण्डेय.....25
10.गिरीश पंकज के उपन्यासों में अभिव्यक्त पत्रकारिता जगत का यथार्थ चित्रण.....28
–प्रकाश चन्द वर्मा.....28
11.हिंदी भाषा का योगदान, सम्भावनाएं तथा चुनौतियां.....31
–डा0 पूजा शर्मा.....31
12.भाषा, समाज, संस्कृति का संबंध और शिक्षा पर प्रभाव.....34
–डॉ.दुर्गेश कुमार शर्मा.....34
13.संत साहित्य में वैश्विक मानव धर्म.....37
–प्रियंका सिंह.....37
14.महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा और शिक्षण मनोवैज्ञानिक सिद्धांत.....39
–डॉ0 हरीश कुमार यादव.....39
15.भारत में संचार माध्यमों में नवीन प्रवृत्तियां.....42
–श्रीमती सपना उपाध्याय.....42
16.प्राचीन भारतीय लोक प्रशासन का स्वरूप.....45
–डॉ0अमय सिंह.....45
17.उपनिषदों में पर्यावरण तत्त्व की समीक्षा.....48
–देवानन्द पाठक.....48
18.राष्ट्रीय शिक्षा निति एवं उच्च व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्र में संस्था का योगदान.....50

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

2.समकालीन हिंदी बाल–काव्य : स्वरूप एवं संभावनाएँ

–प्रो.चंद्रकांत सिंह
प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय,
धौलाधार परिसर–एक, जिला–कांगड़ा

बाल–काव्य बच्चों के जीवन एवं उनकी क्रिया विधि से जुड़ा हुआ प्रमुख साहित्यिक उपक्रम है। साहित्य की इस विधा के द्वारा बच्चों की समूची विकास–प्रक्रिया को समझने एवं जानने का अवसर मिलता है। एक तरह से कह सकते हैं कि शैशव की अठखेलियों एवं जीवन को जानने–बूझने का बाल–कौतुक इस विधा के द्वारा सुगमता से जाना जा सकता है। बड़ों के साहित्य की तरह बच्चों का साहित्य भी ख़ासा उपयोगी है जिसकी सहायता से न केवल बच्चों का समुचित विकास होता है बल्कि बड़ों को अंतर्दृष्टि–दृष्टि भी मिलती है कि बच्चों का पोषण किस तरह हो सके ? बाल–साहित्य को शैक्षिक पाठाचार भी कह सकते हैं जिसकी सहायता से बच्चों के मस्तिष्क, उनकी संवेदात्मकता आदि को सही दिशा प्राप्त होती है। यदि बाल साहित्य कम लिखे जाएँ तो निश्चय ही बच्चों का सर्वांगीण विकास बाधित होगा। बाल–मन चित्रात्मक होता है, बच्चे भाँति–भाँति की कल्पना करते हैं। उनके मस्तिष्क को सृजनात्मक बनाने एवं उन्हें जीवन में गहरे उतारने की दृष्टि से बाल–साहित्य बहुत उपयोगी है। बाल–साहित्य की संकल्पना नयी नहीं है बल्कि अत्यंत प्राचीन एवं अनूठी है। भारत में बच्चों के सम्यक विकास को आरंभ से ही मान्यता दी गयी है। गर्भाधान संस्कार इस बात का बड़ा प्रमाण है, जिसकी सहायता से बच्चों के पोषण की भारतीय परम्परा को समझा जा सकता है। बात यदि मिथकों एवं आद्य बिम्बों की करें तो अभिमन्यु बड़े उदाहरण हैं जिन्होंने गर्भ में ही शस्त्र और शास्त्र की समुचित शिक्षा अर्जित की। भारत की शिक्षा–प्रणाली भी इस मायने में अनूठी है कि यहाँ बच्चों के आध्यात्मिक एवं प्रातिभ ज्ञान पर प्रारंभ से ही बल दिया जाता रहा है। भारतीय ज्ञान–धारा में गुरुकुल बड़े माध्यम रहे हैं जहाँ बच्चे विद्या ही नहीं ग्रहण करते प्रत्युत प्रज्ञा एवं बुद्धि के स्तर पर सांसारिक दक्षता भी अर्जित करते हैं। भारत में शिशु को शुरू से ही सदाशयी, त्यागी, विनयी बनाने पर बल दिया जाता रहा है। बालकों की शिक्षा उन्हें मात्र धन अर्जन करना नहीं सिखाती बल्कि देश एवं राष्ट्र के लिए उत्तरदायी भी बनाती है। भारत में प्राचीन काल से ही बच्चों को वेद–मन्त्र, सुभाषित, उपनिषदों, आदि की शिक्षा दी जाती रही है जिन्हें पढ़कर उनके मनोमय कोश का सही विकास होता रहा है यही नहीं पंचतंत्र, हितोपदेश, कथासरितसागर, सिंहासन बत्तीसी आदि के द्वारा उन्हें जीवन को सही मायनों में जानने की संतुलित दृष्टि भी मिलती रही है। बच्चों को राष्ट्र की धरोहर कह सकते हैं, यदि इन्हें समुचित शिक्षा एवं पोषण मिले तो निश्चय ही वे राष्ट्र के श्रेष्ठ आधायक होंगे। खड़ी बोली हिंदी का बाल–काव्य आरंभ से ही समृद्ध है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक आदि ने अपने साहित्य के द्वारा बच्चों में नैतिक संस्कार को विकसित करने का कार्य किया है। सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, बच्चन, द्वारिका प्रसाद सक्सेना आदि की कविताओं के द्वारा भी न केवल बच्चों का विकास हुआ बल्कि उत्तरोत्तर उन्हें ज्ञान की सभी दिशाओं का बोध हुआ।

हिंदी का समकालीन बाल–काव्य अत्यंत विपुल है, कवियों ने अपनी बाल–कविताओं में अनुभव का विस्तृत वितान रचा है जिसे पढ़कर बच्चों के हाव–भाव को समझने में सहायता मिलती है। समकालीन परिदृश्य की बात करें तो यह सूचनाओं से भरा हुआ है। तथ्यों एवं जानकारियों से भरे हुए समय में हिंदी का बाल–काव्य न केवल बच्चों को बौद्धिक स्तर पर सबल बनाने का कार्य करता है बल्कि उन्हें प्रकृति से जोड़कर रखने का यत्न भी करता है जिससे कि जमीनी स्तर पर उन्हें पोषण मिल सके। 'आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस' के युग में बच्चों की 'इंटेलिजेंस' तभी विकसित होगी जब उन्हें प्रकृति, लोक, गाँव आदि से जोड़कर रखा जायेगा। हिंदी का समकालीन बाल–काव्य जटिलताओं से भरे समय में बच्चों के कोमल तंतुओं की अभिरक्षा का काव्य है जिससे कि उन्हें जागरुक एवं संवेदनशील बनाया जा सके। समकालीन बाल–काव्य को दिशा देने वाले असंख्य कवि हैं जिनकी कविताओं में बाल–मन की सुन्दर झाँकी के साथ मिट्टी, आकाश एवं जल–तत्व से बच्चों की सुघड़ आपसदारी को देखा जा सकता है। मुरलीधर वैष्णव की 'रविवार' कविता अत्यंत महत्वपूर्ण है, इस कविता में कवि ने चिड़िया, बछड़ा, गाय आदि प्राकृतिक–बिम्बों के द्वारा बाल–कल्पना को सुन्दर रूप दिया है। यही नहीं यह कविता इस मायने में अनूठी है कि इसमें बच्चों को आलस्य का परित्याग कर उद्यमी बनने पर बल दिया गया है। यदि बच्चों को प्रारम्भ से ही परिश्रमी, अध्यावसायी एवं निष्ठावान किया जायेगा तभी वे आगे चलकर देश और समाज के लिए अतुल्य योग दे सकेंगे–सुबह हुई चिड़िया चहचहाई/उछला बछड़ा गाय रंभाई/हॉकर पटक गया अखबार/अब तो जागो राजकुमार/कब तक देखूँ तेरा मुखड़ा/पलंग में आया धूप का/टुकड़ा/उठो नहाओ मक्खन खाओ/अब तो मुझको नहीं सताओ/उठो जल्द हो लो तैयार/कुछ पढ़ लो कुछ करो/विचार/आलस को यदि नहीं छोड़ोगे/फिर आगे तुम कैसे बढ़ोगे।[1] 'साहसी बालक' कविता में परशुराम शुक्ल जी बाल–मन को मानवता के विकास में सहायक बनाने पर बल देते हैं। यह कविता शारीरिक रूप से बलशाली होने भर की कविता नहीं है बल्कि इसे मानसिक एवं आत्मिक रूप से सशक्त होने की कविता भी कहा जा सकता है। कहने का आशय यह है कि कवियों की चिंता इस बात को लेकर है कि बच्चे 'एटामिक' एवं 'न्यक्लियर युद्ध' से भरे युग में हिंसक होने की बजाय अहिंसक रूप में अपनी महती संभावना को प्राप्त हो सकें जिससे कि आने वाली सदी शांति, प्रेम एवं करुणा की सदी बन